بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 19 जुलाई 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

बनू मुस्तलक़ नामक युद्ध के हालात एवं घटनाओं का बयान तथा जलसा सालाना बर्तानियः और जलसे में शामिल होने वालों के लिए दुआओं की तहरीक।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-19.07.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- बनू मुसतलक़ नामक युद्ध का वर्णन पिछले ख़ुत्बः में हुआ था। उसके विषय में विस्तृत विवरण हदीस एवं इतिहास में मिलता है। सही बुख़ारी में उसके विवरण में इस प्रकार लिखा है कि जब नबी करीम ﷺ ने बनू मुस्तलक़ पर हमला किया तो वे जागरुक नहीं थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन साहब रज़ी. इस घटना के सम्बंध में फ़रमाते हैं कि इस युद्ध के विषय में सही बुख़ारी में एक रिवायत है कि आँहज़रत ﷺ ने बनू मुस्तलक़ पर ऐसे समय में हमला किया कि वे निश्चिंत होने की अवस्था में अपने पशुओं को पानी पिला रहे थे। यदि ध्यान पूर्वक देखा जाए तो यह रिवायत इतिहासकारों के बयान के विरुद्ध नहीं है। वास्तव में ये दो रिवायतें दो विभिन्न अवसरों से सम्बंधित हैं। मूल घटना इस प्रकार है कि जब इस्लामी सेना बनू मुस्तलक़ के निकट पहुंची तो क्यूँकि उनको पता नहीं था कि मुसलमान बिल्कुल निकट आ गए हैं, यद्यपि उन्हें इस्लामी सेना के आगे बढ़ने की सूचना अवश्य मिल चुकी थी तथा वे संतुष्ट होकर विश्राम की अवस्था में पड़े थे। इसी अवस्था की ओर बुख़ारी की रिवायत में संकेत है। किन्तु जब उन्हें इस्लामी सेना के पहुंचने की सूचना मिली तो वे अपनी निरन्तर पिछली तय्यारी के

अनुसार तुरन्त पंक्तिबद्ध होकर युद्ध के लिए तय्यार हो गए और यह वह अवस्था है जिसका वर्णन इतिहासकारों ने किया है।

इस युद्ध में एक सहाबी ही शहीद हुए थे और वह भी ग़लती से, एक मुसलमान ने उन्हें काफ़िर समझ कर ग़लती से शहीद कर दिया था।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरियः रज़ीयल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि इस लड़ाई वाले दिन मैंने अपनी पिता जी को कहते हुए सुना कि इतनी बड़ी सेना आ गई है कि जिसका मुक़ाबला करने का सामर्थ्य हम में नहीं। आप रज़ी. फ़रमाती हैं कि मैं स्वयं इतने अधिक लोग, हथ्यिार तथा घोड़े इत्यादि देख रही थी कि मैं बयान नहीं कर सकती। जब मैंने इस्लाम क़बूल किया और रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे शादी कर ली और हम वापस आ गए तो मैंने देखने लगी कि मुसलमान मुझे पहले की तरह अधिक नज़र नहीं आए, तब मैंने जाना कि यह अल्लाह तआला की ओर से रौब डालने की घटना थी जो वह मुशरिकों के दिलों में डालता है।

माले ग़नीमत में हाथ आने वाले ऊँटों की संख्या दो हज़ार थी, बकरियों की संख्या पाँच हज़ार थी तथा बन्दियों की संख्या दो घरानों की थी। कुछ इतिहासकारों ने क़ैदियों की संख्या सात सौ से अधिक भी बयान की है। आँहज़रत ﷺ ने हज़रत बरीदा رضي الله عنه को इन बन्दियों का निगरान नियुक्त फ़रमाया था।

आँहज़रत ﷺ ने सारे माले ग़नीमत में से पांचवाँ भाग निकाला। यह पांचवाँ भाग ख़ुदा तआला के आदेशानुसार युद्ध में हाथ आई पूरी धन सम्पत्ति में से वह भाग है जो अल्लाह तथा उसके रसूल ﷺ और रसूल क निकटवर्ती रिश्तेदारों तथा संयुक्त इस्लामी आवश्यकताओं के लिए अलग किया जाता है।

उस क़बीले के जो लोग गिरफ़तार हुए थे उनमें क़बीले के सरदार हारिस बिन अबी ज़िरार की बेटी बर्रा भी थीं जिनका नाम बदल कर आँहज़रत ﷺ ने जुवेरिया रख दिया था। क़ैदियों के वितरण पर जुवेरिया रज़ीयल्लाहु अन्हा एक अन्सारी सहाबी साबित बिन क़ैस को प्रदान की गई थीं। बर्रा ने साबित बिन क़ैस से मकातबत की प्रथानुसार समझौता किया था (मकातबत उसे कहते हैं कि एक सेविका अथवा सेवक अपने स्वामी से यह समझौता कर ले कि वह यदि अपने मालिक को एक निश्चित धन राशि, जो कि नौ ओक़िया सोना थी जो तीन सौ साठ दर्हम बनते हैं, स्वतंत्र होने के बदले के रूप में अदा कर दे तो वह स्वतंत्र समझा जाएगा) इस समझौते के बाद बर्रा आँहज़रत ﷺ के पास उपस्थित हुईं तथा पूरे हालात बताए तथा यह जतलाकर कि मैं बनू मुस्लतक़ के सरदार की बेटी हूँ, स्वतंत्र होने के लिए बदले की धन राशि में सहयोग मांगा। उसकी कहानी से आँहज़रत ﷺ प्रभावित हुए तथा सम्भवतः इस विचार से कि वह एक प्रसिद्ध सरदार की बेटी है, सम्भव है कि इसके साथ सम्बंध बनाने से तबलीग़ में सुविधा पैदा हो जाए, आप स. ने निश्चय किया कि इससे शादी फ़रमा लें। बर्रा की ओर से सहमति होने पर आप स. ने स्वतंत्रता के बदले में अदा की जाने वाली धन राशि उनको प्रदान करके उनसे शादी कर ली।

सहाबा رضي الله عنه ने जब यह देखा तो इस बात को पसन्द न किया कि रसूलुल्लाह ﷺ के ससुराल वालों को अपने हाथों में क़ैद करके रखें अतएव एक सौ घराने अर्थात सैंकड़ों क़ैदी स्वतंत्र होने के बदले में दी जाने वाली धन राशि दिए बिन ही तुरन्त स्वतंत्र कर दिए गए। इसी लिए हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु तआला

अन्हा फ़रमाती थीं कि जुवेरियः अपनी क़ौम के लिए अत्यंत मुबारक साबित हुई हैं। रसूलुल्लाह ﷺ इस युद्ध से सफल एवं कुशलता पूर्वक वापस तशरीफ़ लाए तथा कुल अटठाईस दिन आप स. मदीने से बाहर रहे।

इस युद्ध से वापसी पर मुनाफ़िक़ों के मुख्या अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल का पाखंड भी खुल कर प्रकट हो गया। एक घटना पर अब्दुल्लाह बिन अबी ने क़ुरैश एवं रसूलुल्लाह ﷺ के विरुद्ध अपने क़बीले वालों को बहकाने का प्रयास किया तथा यहाँ तक कहा कि मदीने पहुंच कर सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति, सबसे अधिक अपमानित व्यक्ति को नगर से निकाल देगा। ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه ने इस अवसर पर स्वाभिमान का प्रदर्शन किया और अब्दुल्लाह बिन अबी को टोका एवं कहा कि तू ही अपनी क़ौम में सर्वाधिक अपमानित है और फिर आप रज़ी. ने रसूलुल्लाह ﷺ के पास उपस्थित होकर उसकी पूरा बात बता दी। रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़ैद रज़ी. की बात को नापसन्द किया और फ़रमाया कि ऐ लड़के! शायद तुझे अब्दुल्लाह बिन अबी पर क्रोध है। रिवयतों में वर्णित है कि इसके बाद अब्दुल्लाह बिन अबी स्वयं अथवा किसी के कहने पर रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया तथा ख़ुदा की क़सम खा कर कहा कि ज़ैद ने जो कुछ कहा है वह सब ग़लत है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत ﷺ ने भी यही समझा था कि अब्दुल्लाह बिन अबी ने बात अवश्य कही है। इसके बाद हुज़ूर ﷺ ने रवानगी का आदेश दिया तथा अन्सार में से कुछ मुख्याओं के मालूम करने पर फ़रमाया कि क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे साथी ने क्या बात कही है, अर्थात यह कि मदीने वापस पहुंच कर सबसे अधिक सम्मानित व्यक्ति सबसे अधिक अपमानित व्यक्ति को नगर से निकाल देगा। इस बात पर उन निष्ठावान अन्सार सहाबियों ने निवेदन पूर्वक कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ निःसन्देह आप स. ही सर्वाधिक प्रतिष्ठावान हैं तथा समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के लिए हैं, यदि आप स. चाहें तो अब्दुल्लाह बिन अबी को नगर से निकाल दें और यदि चाहें तो उसके साथ विनम्र व्यवहार फ़रमाएँ।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अब्दुल्लाह बिन अबी ने जो बात कही थी उसके सम्बंध में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने जो विस्तार बयान फ़रमाया है, वह इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अगले जुम्अः को इन्शाअल्लाह बर्तानिया का जलसा सालाना भी शुरु होगा, उसके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हर दृष्टि से इस जलसे को बरकत वाला फ़रमाए। समस्त कार्य-कर्ताओं को सुन्दर आचरण दिखलाते हुए तथा क़ुर्बानी की भावना से अपने कर्त्तव्यों को निर्वाह करने का सामर्थ्य प्रदान करे। जो मेहमान आए हैं तथा जो अभी यात्रा की बीच में हैं सबको अपनी शरण में रखे। आमीन

ख़ुत्बः के अन्तिम भाग में हुज़ूरे अनवर ने तीन मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाते हुए जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

1- मोहतरमा सलीमा बानो साहिबा पतनी हमीद कौसर साहब नाज़िर दावत इलल्लाह उत्तरी भारत। मृतक मूसियः थीं, अत्यंत मेहमान नवाज़, सरल स्वभाव की मालिक, दुआएँ करने वाली, नफ़लों की पाबन्द तथा संतोष पसन्द महिला थीं। आपको सदर लजना बम्बई के रूप में सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। जब मृतक के पति कबाबीर में मुबल्लिग़ थे तो वहाँ तुरन्त बोल चाल की अरबी भाषा सीखी तथा महिलाओं की शिक्षा दीक्षा में भरपूर भाग लिया। मरहूमा को एक लम्बे समय तक सदर लजना इमाउल्लाह कबाबीर सेवा का सामर्थ्य मिला, वहां इज्तिमा के आयोजन का काम शुरु करवाया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने लजना इमाउल्लाह कबाबीर के इज्तिमा के विषय में उनकी प्रशंसा करते हुए फ़रमाया था कि लजना इमाउल्लाह कबाबीर, समस्त अरबी महिलाओं पर आधारित लजना संगठन है, केवल उनमें एक कशमीर भारत से गई हुई महिला हैं किन्तु वे भी अब पूर्णतः अरबों की भांति बन चुकी हैं। एक बेटे अताउल मुजीब कौसर को एम टी ए अल-अबीय्यः यू.के. में सेवा कर रहे हैं। बेटो बुशरा कौसर साहिबा डा. ऐमन ओदे की पतनी हैं, लजना इमाउल्लाह हॉलैंड में नैशनल सैकरेट्री ख़िदमते ख़ल्क़ के रूप में सेवा कर रही हैं। छोटे बेटे शरीफ़ कौसर मुरब्बी सिलसिला क़ादियान, नायब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तथा एडिश्नल इंचार्ज समअी बसरी विभाग हैं। अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत का सलूक फ़रमाए तथा उनकी नेकियाँ संतान में जारी रखे।

मुकर्रम नूरुलहक़ मज़हर साहब ऑफ़ लाहौर। मृतक मूसी थे, बड़े धैर्यवान, निडर, तहज्जुद पढ़ने वाले, पाँचों नमाज़ा के पाबन्द, क़ुर्आन करीम की तिलावत का चाव रखने वाले, उदार हृदय, निर्धनों का ध्यान रखने वाले सज्जन पुरुष थे। मृतक के बेटे राग़िब ज़ियाउल हक़ तथा बेटी अमतुल मतीन साहिबा सेवा के मैदान में कार्यरत रहने के कारण जनाज़े में शामिल नही हो सके।

मोहतरमा अमतुल हफ़ीज़ निघत साहिबा पतनी मुकर्रम मुहम्मद शफ़ी साहब मरहूम, रबवा। मृतक सौम व सलात की पाबन्द, दुआएँ करने वाली, ख़िलाफ़त से अत्यंत प्रेम करने वाली, तबलीग़ में रूचि रखने वाली, निर्धनों तथा बीमारों का ध्यान रखने वाली, उच्च शिष्टाचार की स्वामी महिला थीं।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत एवं दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131